Bareilly, Monday,
13 December 2021
BAREILLY EDITION
Price ₹ 3.00/-
Pages 12

दैनिक जागरण

PAGE NO. 04, BOTTOM

'हब्बा खातून' में दिखी जीवन यात्रा की झलक

जागरण संवाददाता, बरेली: एसआरएमएस रिद्धिमा का मंच व रविवार की शाम। कश्मीरी पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक 'हब्बा खातून' के मंचन में कलाकारों की जुगलबंदी। रह-रह कर गूंजती दर्शकों की तालियां। गरीब परिवार में पैदा होने से लेकर कश्मीर की मलिका बनने तक का शायरा हब्बा खातून का सफर देख दर्शक वाह-वाह कर उठे।

नाटक का शुरुआती दृश्य, हब्बा खातून पर पढ़ने का जुनून सवार था। वह अपने परिवार से लड़-झगड़ कर पढ़ती है। गरीबी के कारण उनके माता-पिता उनकी शादी कर देते हैं। पति और ससुराल के जुल्म को वह कविताओं और गीतों में बयां करती है। एक दिन हब्बा का पति उसे पीटता है, जिसे उसके पिता भी देख लेते हैं। इसके बाद वह हब्बा को अपने साथ ले जाते हैं। एक दिन वह अपनी मधुर आवाज में गा रही थी तो शिकार

हब्बा खातून नाटक का मंचन करते कलाकार • सौजन्य से एसआरएमएस

एसआरएमएस रिद्धिमा में हुआ नाटक का मंचन, शायरा हब्बा खातून ने अपने जीवनकाल में देखे कई उतार-चढ़ाव

खेलने आए कश्मीर के बादशाह यूसुफ शाह चक उसपर मोहित हो गए। उन्होंने हब्बा खातून को अपनी रानी बना लिया। यूसुफ शाह के साथ शादी के बाद हब्बा खातून ने जो कविताएं लिखीं, उनमें प्रेम झलकता है। मुगल बादशाह अकबर ने इसी दौरान कश्मीर पर हमला कर यूसुफ शाह चक को बंदी बना लिया। इसके बाद उन्होंने यूसुफ शाह की याद में, उनसे पुनर्मिलन की आस में कई हृदय विदारक गीत लिखे। अंत में अपने बेटे वली अहद को रियासत सुपुर्द कर यूसुफ की तलाश में निकल जाती हैं। लेखिका और रूबरू थियेटर की फाउंडर काजल सूरी ने ही इसका निर्देशन भी किया।

चंद्रानी मुखर्जी ने अपने अभिनय से हब्बा के किरदार को जीवंत कर दिया। सभागार में एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋचा मूर्ति, रूबरू थियेटर के प्रेसिडेंट समीर खान, वाइस प्रेसिडेंट और को-आर्डिनेटर मधु शर्मा, रोहित शर्मा और शहर के संभ्रांत लोग मौजूद रहे।